बुद्धवर्ष २५५०, श्रावण पूर्णिमा, ९ अगस्त, २००६ वर्ष ३६ अंक २

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

मेत्ताविहारी यो भिक्खु, पसन्नो बुद्धसासने।
अधिगच्छे पदं सन्तं, सङ्खारूपसमं सुखं॥
धम्मपद– ३६८.

मैत्री (भावना) से विहार करता हुआ जो भिक्षु (साधक) बुद्ध के शासन में प्रसन्न रहता है, (वह) (सभी) संस्कारोंका शमन करनेवाले शांत (और) सुखमय पद (निर्वाण) को प्राप्त करता है।

('जागे पावन प्रेरणा' पुस्तक से साभार उद्धृत)

धन्य है मैत्री भावना

बड़ा सरल है शांत रहना, बड़ा सरल है क्रोध-कोपविहीन रहना, बड़ा सरल है मुस्कराते रहना जबकि जीवनधारा एक मधुमय संगीत की भांति सर्वथा मनोनुकूल बह रही हो, जबकि हमारे संसर्ग में आने वाला हर व्यक्ति हमारी मनचाही बोल रहा हो, मनचाहा कर रहा हो, हमारी सारी मनोकामनाएं सहज-सरल रूप से पूरी हो रही हों, चारों ओर बसंत की हरियाली ही हरियाली हो, कहीं पतझड़ का नाम न हो। परंतु सच्चा साधक तो वही है जो सर्वथा विपरीत अवस्थाओं में मन की समता बनाये रख सके। जब जीवन में मनचाही जरा भी न हो, जीवन-पथ ऊबड़-खाबड़ ही ऊबड़-खाबड़ हो, चारों ओर कँटीला पतझड़ हो, हरियाली का नामोनिशान न हो, जो मिले वही कटुता का व्यवहार करे, अकारण अपमानित करे, सारी घटनाएं अनचाही ही घटें, मनचाही एक भी न घटे; तो भी अपने मन में लेशमात्र भी द्वेष-द्रोह न जागने पाये, कोप-क्रोधन जागने पाये। अनचाही से निष्प्रभावित हो सौम्यचित्त, करुणा और मैत्री के अगाध जलाशय सदृश सौमनस्यता से लहराता रहे। बाहरी प्रतिकूल परिस्थितियों से किंचित भी विचलित न हो। रंचमात्र भी दौर्मनस्य न जागे। तो ही सही माने में परिपक्व विपश्यी साधक है। हमें इस अवस्था तक पहुँचने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना है।

भगवान ने भिक्षुओं को यही बात समझाते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत किया। भूतकाल में श्रावस्ती नगरी में वैदेहिका नाम की एक गृहिणी इस बात के लिए बहुत लोक-प्रसिद्ध थी कि वह अत्यंत शांत-सौम्य स्वभाव वाली है। उसमें कलह-क्रोधका नामोनिशान नहीं है। कड़वी-कठोर बात उसकी जबान पर कभी नहीं आती। एक नौकरानी थी उसके यहां –काली नाम की। बेहद परिश्रमी, सेवा-भावी, हँसमुख, विनम्र, विनीत। मालकिन से पहले उठ कर घर का सारा काम-काज बड़ी मुस्तैदी से कुशलतापूर्वक निपटा लेती। मालकिन को शिकवा-शिकायत का कभी मौका ही नहीं मिलता। घर सदा साफ-सुथरा, सजा-सँवरा रहता। मनपसंद भोजन समय पर तैयार मिलता। घर में कोई मेहमान आ जाय तो उसकी खातिर तवज्जह में कहीं कोई कमी नहीं रहती। सब कुछ मनचाहा, सब कुछ मनभाहा। सुहावना ही सुहावना। यह सब कुछ दासी काली की बदौलत। मालकिन के होठों पर सदा मंद-मंद स्मिति, मंद-मंद मुस्कान।

मालकिन के सौम्य स्वभाव को काली रोज देखती। बाहर भी इसकी चर्चा सुनती। एक बार उसके मन में आया कि अपनी मालकिन की परीक्षा ले कर देखे। क्या वह निसर्गतः सौम्य स्वभाव वाली है अथवा काली की निर्दोष सेवा के कारण ऐसी है।

दूसरे दिन काली जानबूझ कर देर से उठी और घर का काम-काजसमय पर नहीं कर पाई। मालकिन को बहुत बुरा लगा। अगले दिन और देर से उठी तो मालकिन की झल्लाहट बढ़ी। उसने गुस्से में काली पर गालियां बरसीं। तीसरे दिन और देर से उठी। अब तो मालकिन से सहा नहीं गया। उसका पारा बहुत तेज हो गया। बात गाली-गलौज पर ही नहीं रुकी। वह क्रोधित हुई और पास पड़ी हुई कलछी काली के सिर पर दे मारी। सिर से खून की धारा बह चली। मालकिन के सौम्य स्वभाव की पोल खुल गयी। अनचाही के प्रति क्रोध करने का दूषित स्वभाव मानस की जड़ों तक बड़ा सबल होता है, दृढ़मूल होता है। परंतु मनचाही होती रहे तो ऊपर-ऊपर की प्रसन्नता उसे ढांपे रखती है। स्वभाव तो भीतर का बदलना है। सीखना यह है कि अनचाही में हम अकुपित और शांत-सुमन कैसे रह सकें।

उन्हीं दिनों एक भिक्षु का भिक्षुणी-संघ के प्रति जरूरत से ज्यादा लगाव हो गया था। भिक्षुणियों के खिलाफ कोई एक शब्द भी बोले तो वह चिडचिडा उठता था। उसे ही लक्ष्य कर भगवान ने उस समय सच्ची और गहरी सहिष्णुता भरी मैत्री का सारगर्भित उपदेश दिया। भगवान ने समझाया – "भिक्षुओ, कोई व्यक्ति तुमसे समयानुकूल बोले या प्रतिकूल, सच बोले या झूठ, स्नेह-स्निग्ध मृदुल वाणी बोले या कर्कश-कटु, सार्थक बोले या निरर्थक, मैत्रीपूर्ण चित्त से बोले या द्रोहपूर्ण चित्त से, तुम्हें तो हर अवस्था में अपने चित्त को विकार-विमुक्त रखना चाहिए। तुम्हारे मुँह से भूल कर भी कोई दुर्वचन न निकले। चित्त सदा मैत्रीभाव से आप्लावित रहे। जरा भी द्वेष-दुर्भाव न जागे, बल्कि उसी व्यक्ति को आलंबन बना कर अपनी मंगल-मैत्री को अपरिमित बनाने का अभ्यास आरम्भ कर दें। इस प्रकार उसे अपने कल्याण का कारण बना लें।

उन गृहत्यागी, निर्वाणोन्मुख भिक्षुओं को भगवान ने उपमाओं से समझाया –

१. कोई नासमझ व्यक्ति हाथ में कुदाल-फावड़ा ले कर आये और कहे कि मैं इस महापृथ्वी को खोद-खोद कर समाप्त कर दूंगा।

२. कोई नासमझ व्यक्ति लाख, हल्दी या मजीठ का रंग घोल कर लाये और कहे कि मैं इस सारे आकाश को इस रंग से रँग दूंगा।

३. कोई नासमझ व्यक्ति घास-फूस इकट्ठा कर आग जलाये और कहे कि इससे मैं गंगा के सारे जल को तपा दूंगा।

४. कोई नासमझ व्यक्ति सुकोमल, मुलायम बालों वाली बिल्ली के शरीर को किसी खुरदरी लकड़ी से रगड़े और कहे कि मैं इन बालों को खुरदरा बना दूंगा।

तो यह सब के सब असफल ही होंगे। इसी प्रकार कोई तुम्हारी समता भंग करना चाहे, तुम्हें क्रुद्ध करना चाहे तो भले हजार प्रयत्न करे, पर यदि तुम्हारी मैत्री सबल होगी तो वह असफल ही होगा।

पृथ्वी महान है। किसी की कुदाल से खोदी जाने पर नष्ट होने वाली नहीं। आकाश अनंत है। किसी के रंगों से रँगा जा सकने वाला नहीं। गंगा विशाल है। किसी घास-फूस की आग से तपाई जा सकने वाली नहीं। बिल्ली के रोएं स्वभाव से कोमल हैं। किसी खुरदरी लकड़ी से रगड़े जाने पर खुरदरे बन जाने वाले नहीं।

इसी प्रकार किसी भिक्षु की मैत्री अनंत-अपरिमित हो और यह उसका स्वभाव बन जाय तो किसी व्यक्ति के सीमित प्रयत्नों द्वारा नष्ट हो जाने वाली नहीं। अतः भिक्षुओं को अपना मैत्री-बल अपरिमित कर लेना चाहिए। यहां तक कि यदि दो दुष्ट दुर्जन दो मूठ वाले किसी आरे को पकड़ कर भिक्षु के शरीर का कोई अंग भी काटें तो उनके प्रति द्वेष न जगने पाये। मैत्री ही जागे। तो ही भगवान की शिक्षा के पालन की सफलता है। अतः अपना मैत्री-बल अपरिमित करें!

अनेक भिक्षु ऐसे होते थे जो भगवान के आदेश को शिरोधार्य कर गम्भीरतापूर्वक उसका पालन करने लगते थे। उदाहरणस्वरूप एक बार भगवान ने कहा कि वह एकासन भोजनसेवी हैं याने चौबीस घंटे में केवल एक ही बार भोजन करते हैं। इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। वह निरोगी रहते हैं। उनकी स्फूर्ति और बल बढ़ता है और शारीरिक सुख भी। इसे सुन कर अनेक भिक्षु एकासन भोजनसेवी बने। यद्यपि भिक्षु-विनय के नियमों के अनुसार केवल विकाल भोजन याने मध्याह्नोपरांत के भोजन से विरत रहना ही पर्याप्त था।

इसी प्रकार इस सबल मैत्री भावना के विकास में अनेक भिक्षु लग गये। एक उज्वल उदाहरण –

सूनापरांत के सुप्पारक पत्तन (बंदरगाह) का निवासी, 'पूर्ण' नामक व्यापारी व्यवसाय हेतु श्रावस्ती गया। वहां भगवान के संपर्क में आया तो धर्म के संपर्क में आया। बहुत वैराग्य जागा और वहीं प्रव्रजित हो भिक्षु संघ में सम्मिलित हो गया। वह भगवान के उपदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाला था। कुछ समय पश्चात स्वदेश लौटने का मन हुआ तो भगवान से आज्ञा लेने गया।

भगवान ने पूछा – "सूनापरांत जनपद के लोग बड़े कठोर हैं। चंड स्वभाव वाले हैं। वे तुझ पर आक्रोश करेंगे। तुझे कटु वचन बोलेंगे। तो तुझे कैसा लगेगा, पूर्ण?"

"मुझे अच्छा ही लगेगा, भगवान! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि सूनापरांत के लोग बड़े भद्र हैं, सुभद्र हैं। बहुत भले हैं। मुझ पर नाराज होने पर केवल चंद कटु वचन कह कर आक्रोश प्रकट करते हैं, मुझे हाथ से तो नहीं मारते।"

– "यदि वह तुझे हाथ से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

–"अच्छा ही लगेगा, भगवान! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि यह कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं। कितने भले हैं। केवल हाथों से मार कर रह गये। ढेलों से तो नहीं मारा।"

– "और यदि वह ढेलों से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

–"अच्छा ही लगेगा, भगवान! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि कितने भद्र हैं, कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं यह लोग। केवल ढेले से मार कर रह गये। डंडे से तो नहीं मारते मुझे। सचमुच भले हैं।"

– "और यदि डंडे से मारें तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

–"अच्छा ही लगेगा, भगवान! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं, कितने भले हैं यहां के लोग। केवल डंडे से मार कर रह गये। शस्त्र से नहीं मारते मुझे। सचमुच बड़े भले हैं।"

– "और यदि शस्त्र से मारें तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

–"अच्छा ही लगेगा, भगवान! मन में यही भाव जागेगा कि कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं यहां के लोग। कितने भले हैं। सामान्य शस्त्र से मार कर घायल ही तो किया। किसी तेज शस्त्र से मार कर मेरे प्राण तो नहीं हर लिये।"

–"और यदि वह तुझे तेज शस्त्र से मार डालें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

–"अच्छा ही लगेगा, भगवान! कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो दुःखमय जिंदगी से ऊब कर मरने के लिए किसी शस्त्रधारी प्राणघातक को ढूंढते हैं। सो मुझे यह शस्त्रधारी प्राणघातक बिना ढूंढे ही मिल गये। कितने भले हैं यहां के लोग।"

"साधु! साधु! साधु!" भगवान ने साधुकार दे कर कहा –"पूर्ण! तू ऐसे धर्ममय चित्त से अपनी मातृभूमि में सफलतापूर्वक निवास कर सकता है और धर्म-सेवा कर सकता है।"

यों भगवान का आशीर्वाद ले कर भिक्षु पूर्ण स्वदेश लौटा और आते हुए भगवान से जो साधना-विधि सीखी थी उसका अभ्यास करते हुए पहले ही वर्षावास में उसने अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। पहले ही वर्षावास में उस प्रदेश के एक हजार नर-नारियों को शुद्ध धर्म में प्रतिष्ठापित कर दिया। तदनंतर उनकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती गयी। अनेक लोगों को धर्म-लाभ मिला।

भगवान के प्रशिक्षण के अनुकूल सधे हुए असीम मैत्री-बल से भिक्षु पूर्ण ने उस प्रदेश में जो शुद्ध धर्म का बीज वपन किया, वह कालांतर में खूब फैला, खूब फूला, खूब फला।

आज के महाराष्ट्र का समस्त उत्तरी तथा पूर्वी प्रदेश अरहंत पूर्ण की धर्म-सेवा के कारण शुद्ध धर्म की पावन गंगा से लहलहा उठा। मैत्री-बल से कठोर स्वभावी लोग मृदु स्वभावी हो गये। इस प्रदेश में स्थान-स्थान पर कठोर चट्टानों में कटी हुई ध्यान गुफाएं मैत्री-प्रबल अरहंत पूर्ण और उसके योग्य शिष्यों-प्रशिष्यों की अपूर्व सफलता की आज भी मधुर याद दिलाती हैं; वहां की पावन लहरियां उनकी गौरव गाथाएं गाती हैं।

धन्य है मंगलमयी मैत्री-भावना! धन्य है मैत्री-भावना से परिपूर्ण पूर्ण!!

मंगल मित्र,
स. ना. गो.

धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण के लिए
'विज्ञप्ति'

एक महीने का सघन पालि-हिंदी प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका द्वितीय सत्र **२१ नवंबर २००६ से २२ दिसंबर २००६** तक निर्धारित हुआ है। इस सत्र के बीच में कोई अवकाश नहीं होगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि ३० सितंबर २००६ है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) शैक्षणिक योग्यता – १२वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक व्यक्ति को वरीयता दी जायगी।

बी) अन्य योग्यताएं – १. पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, २. एक सतिपट्ठान शिविर, ३. पंचशील का पालन, ४. दो वर्ष से प्रतिदिन नियमित दो घंटे की साधना एवं ५. विद्या के प्रति समर्पण।

बीस दिवसीय शिविर किये हुए व्यक्ति को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग बीस (पुरुष एवं महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

एक महीने का सघन पालि-हिंदी उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ हो रहा है, जो कि **२४ दिसंबर २००६ से २३ जनवरी २००७** तक चलेगा। इसके बीच में भी कोई अवकाश नहीं होगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि ३० सितंबर २००६ है।

प्रवेश योग्यताएं –

इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त करें।

पालि प्रशिक्षण कार्यशाला, लखनऊ
(दिनांक ७.७.२००६ – १८.७.२००६)

प्रतिवेदन

'धम्मलक्खण' के संचालक मंडल द्वारा उक्त कार्यशाला का आयोजन दीनदयाल उपाध्याय राजकीय ग्राम्य विकास संस्थान, लखनऊ के सुरम्य परिसर में किया गया जहां साधकों और साधिकाओं के रहने, भोजनादि की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध थी। इस कार्यशाला में २६ नगरों के ५३ लोगों ने भाग लिया जिनमें ४० पुरुष तथा १३ महिलाएं थीं।

पिछले कुछ समय से पूज्य गुरुजी इस बात पर बल देते आ रहे हैं कि 'परियत्ति' और 'पटिपत्ति' इन दोनों में साधकों को निपुण होना चाहिए। ये दोनों किसी रथ के दो पहियों के समान हैं, जिनके मजबूत होने पर ही रथ ठीक प्रकार से चल सकता है। 'परियत्ति' में कुशल होने पर 'पटिपत्ति,' अर्थात साधना भी, पुष्ट से पुष्टतर होती जाती है और धर्म भी गहराई से समझ में आने लगता है।

भाग लेने वालों ने इस बात की पुष्टि भी की कि कार्यशाला के तीसरे दिवस से उनकी साधना तेज होने लगी। (कार्यशाला में प्रतिदिन चार बार ध्यान और चार बार पालि सिखाने का आयोजन हुआ करता था।)

कार्यशाला की समाप्ति पर इसमें भाग लेने वालों ने अपने-अपने मंतव्य प्रकट किये, जिनमें से कुछ एक नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

- हमारे लिए यह एक अत्यंत 'शुभ अवसर' था।
- धर्म के वास्तविक रूप को समझने के लिए यह अत्यंत उपादेय सिद्ध हुई।
- पालि सीखने के लिए खूब प्रेरणा जागी। - नया प्रकाश फूटा।
- 'परियत्ति' से धर्म के प्रति और श्रद्धा जागी और साधना में तीव्र प्रगति हुई। - पालि के क्षेत्र में कामकरने की प्रबल इच्छा जागृत हुई।
- भविष्य में जीवन की कठिनाईयों से जूझने के लिए काफी 'बारूद' (ammunition) प्राप्त हुआ। - पालि एकदम आसान मालूम दी।
- कार्यशाला की समयावधि बढ़ाई जानी चाहिए।
- धर्म के बारे में अनमोल जानकारी हासिल हुई।
- पालि-उच्चारण के समय दोष हुआ करते थे, उनका निवारण हुआ।
- मैं यह आशा लेकर आया था कि कार्यशाला में पालि के बारे में 'बल्ब' की-सी रोशनी प्राप्त होगी पर इसमें से गुजरने पर यह एहसास हुआ कि यहां पर 'सूर्य' का-सा प्रकाश मिला है।
- एक डाक्टर महिला ने व्यक्त किया; 'मैं चाहती हूं कि पालि हमारी मातृभाषा बन जाय'।
- टी. वी. के माध्यम से भी पालि सिखाई जा सकती है।
- बंगाल देश की एक महिला ने प्रकट किया कि पालि 'संस्कृत' एवं 'हिंदी' दोनों भाषाओं से कहीं अधिक सरल है।
- एक ने आतुरतावश अपने नगर में अगले वर्ष पालि प्रशिक्षण कार्यशाला निश्चित रूप से लगवाने के लिए समयावधि भी अंकित कर दी।

इस प्रकार उक्त कार्यशाला की सफलता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। यह तो सुस्पष्ट ही है कि लोगों के मन में पालि के कठिन होने के बारे में जो डर घुसा हुआ था, वह काफी हद तक दूर हुआ है।

'विपश्यना' पत्रिका संबंधी आवश्यक सूचना

जिन्हें पत्रिका के लिए अपना पता बदलना हो वे कृपया अपना नया और पुराना दोनों पता लिखें। पत्रिका संबंधी पत्राचार करते समय कृपया पते के ऊपर छपी अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें। (सं.)

जापान में दूसरा विपश्यना केंद्र

जापान की राजधानी टोकियो के समीप, शहर के बाहर १६,५०० वर्गमीटर की छोटी-सी पहाड़ीनुमा जमीन, जहां कभी 'बेस-बाल' की फील्ड थी, विपश्यना केंद्र के लिए खरीद ली गयी है। यह शहरी कोलाहल से दूर धान आदि के खेतों के मध्य सुदर्शनीय स्थल पर स्थित है। लगभग सवा करोड़ की आबादी वाले टोकियो शहर से कार द्वारा केवल ९० मिनट की दूरी पर स्थित होने के कारण अधिकाधिक लोगों के कल्याण में सहायक होगा। केंद्र तक रेल्वे मार्ग की भी सुविधा प्राप्त है। पूज्य गुरुजी ने इसे '**धम्मादिच्च**' नाम दिया है, जिसका अर्थ है धर्म का सूर्य।

धम्मादिच्च ट्रस्ट की स्थापना हो चुकी है और निर्माण की योजनाओं पर विचार-विमर्श चल रहा है। पुराने साधक यहां साप्ताहिक साधना करने लगे हैं। महीने में एक बार एक-दिवसीय शिविर लगने लगे हैं। क्योटो के पास स्थित विपश्यना का पहला केंद्र '**धम्मभानु**' विगत १८ वर्षों से लोगों की धर्मसेवा में रत है।

अधिक जानकारी और पुण्यार्जन के इच्छुक लोग निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं – Japan Vipassana Association (JVA) *Dhammādicca*, 782-1 Kaminogo, Mutsuzawa-machi, Chosei-gun, Chiba, Japan 299-4413. Tel: 81-475-403611

सुमात्रा में प्रथम विपश्यना शिविर

इंडोनेशिया द्वीप समूह के छोटे से द्वीप सुमात्रा के मेडन शहर में जून २००६ में पहला शिविर लगा जिसमें ३५ साधकों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। कैथलिक इंस्टीट्यूशन में लगे इस शिविर में यहां की प्रमुख साध्वी ने भी भाग लिया। लगभग एक महीने के भीतर ही दक्षिणी सुमात्रा के पालेमबैंग में एक अन्य शिविर कैथलिक कैम्प में लगा, जिसमें ३८ लोगों ने भाग लिया। दोनों स्थानों पर स्थानीय समितियों का गठन किया गया है जो कि भविष्य में और भी शिविर लगवाते रहने का कार्य करेंगी।

दोनों शिविरों में धर्मसेवा के लिए बगल के जावा द्वीप के साधक आये, जहां '**धम्मजावा**' विपश्यना केंद्र २००३ से ही सक्रिय है। यह जकार्ता के दक्षिणी क्षेत्र में सुंदर पहाड़ियों के मध्य स्थित है।

दक्षिण भारत का विपश्यना केंद्र

केरल के प्रथम विपश्यना केंद्र '**धम्मकेतन**' की जमीन खरीद ली गयी है और **केरल विपश्यना समिति** को आयकर की धारा ८०-जी के अंतर्गत आयकर सुविधा प्राप्त हो गयी है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क –

Mr. B. Ravindran, Tel: 0484 2539891, Mobile: 098465-69891. (**Kerala Vipassana Samiti**, Lord Krishna Bank Kaloor branch, Kochi 682 017, SB account no: 310.1.30163)

आस्था टी. वी. चैनल पर १५ अगस्त के बाद प्रतिदिन प्रातः ९:४० बजे से २० मिनट तक, पूज्य गुरुजी की श्रीलंका यात्रा का विवरण प्रसारित किया जायगा। जो धर्मयात्रा में शामिल नहीं हो सके थे, उनके लिए श्रीलंका-दर्शन का यह सुअसर उपलब्ध है।

मंगल मृत्यु

नागपुर की सहायक आचार्या **श्रीमती मनोरमा गजभिये** ने ३ मई को अपना शरीर छोड़ दिया। इसी प्रकार ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा की वरिष्ठ सहायक आचार्या **सुश्री टोनी ओ'हेर** ने ९ जुलाई को शरीर त्याग किया। इन दोनों ने धर्म की बहुत सेवा की है। इसके पुण्यस्वरूप इनका मंगल हो!

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

U Thaung Pe & Daw Myint Myint Tin, *Myanmar*
To serve Dhamma Joti
Daw Saw Mya Yee, *Myanmar*
To serve Dhamma Joti
Daw Yema Maw Naing, *Myanmar*
To serve Dhamma Joti

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री सुरेश एवं श्रीमती गीता संपत, मुंबई
३. Mr. D. H. Anura Piyatissa, *Sri Lanka*
4. Mr. Simon Gevers & Mrs. Nikki Miller, *Australia*
5. Ms. Pella Shalvey, *Australia*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. Mr. John & Mrs. Cindy Pinch, *USA*

बाल शिविर शिक्षक

१. श्रीमती आशा तिवारी, रतलाम
२. श्री श्रीनिवासन, मालूर, कर्नाटक
३-४. श्री शिवन्ना एवं श्रीमती नागरत्ना, हरिहरपुरा, कर्नाटक
५. श्री रामाराव एन. एस., चिकमगलूर, कर्नाटक
६. श्री माधव ए. बी., चिक." ७. श्री के. आर. मुरलीधर, चिक."
८. श्री श्रीनिवास मूर्थी, दावनगेरे," ९. Mrs. Tracy Hudson, *USA* १०. Mr. Patrick Murphy, *USA*

दोहे धर्म के

चित्त हमारा शुद्ध हो, सद्गुण से भर जाय।
करुणा, मैत्री, सत्य से, मन मानस लहराय॥
निर्मल निर्मल सब कहें, पर समझे ना कोय।
राग द्वेष और मोह के, छूटे निर्मल होय॥
जब तक मन में कुटिलता, तब तक मन बेचैन।
जब आए मन सरलता, तब आए सुख चैन॥
इस विस्तृत संसार में, भरे विषय भंडार।
कमल सदृश जल में रहे, जागे नहीं विकार॥
मैल छुटे तो ही करे, स्वच्छ सुखद व्यवहार।
सुमन होय सत्कर्म से, करे जगत उपकार॥
मैत्री करुणा प्यार से, हृदय तरंगित होय।
जन-जन का हितसुख सधे, निज हितसुख भी होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः **०२२-**२४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

मंगळकारी धरम रो, किसो क प्रबल प्रभाव।
अंतरमन रा दुख मिटै, सीतळ हुवै सुभाव॥
ब्याकुल मानव मानवी, चखै धरम रो स्वाद।
रोग सोक सारा मिटै, बिपदा मिटै बिसाद॥
मंगळ मैत्री भाव स्यूं, पुलकित रवै सरीर।
करुणा उमड़ै चित्त मँह, देख परायी पीर॥
सबकै प्रति मंगळ जगै, मैत्री जगै अपार।
द्वेस द्रोह जागै नहीं, जगै प्यार ही प्यार॥
स्नेह और सद्भाव को, रवै उमड़तो ज्वार।
रोम रोम जगतो रवै, मैत्री करुणा प्यार॥
सैं कै मन जागै धरम, सुख छावै परिवार।
बैर मिटै मैत्री जगै, सुखी हुवै संसार॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ००-९७७-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, श्रावण पूर्णिमा, ९ अगस्त, २००६**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१**. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **LII/RNP-WPP-03**

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org